॥ श्रीः ॥

तत्त्वबोधः

गाजीपुर मण्डलान्तर्गत बालापुर निवासी-

पं॰ विश्वनाथ कृत ।

❀ भाषा टीका सहितः ❀

मुमुक्षुभिः स्वामी कृष्णानन्दयतिभिः संशोधितः
मुमुक्षुणांकृते महोपकारी ग्रन्थोऽयम् ।

स च

फर्म-बाबू बैजनाथ प्रसाद

बुकसेलर महोदयेन

काश्यां

विश्वेश्वर नाम्नि यन्त्रालये मुद्रितं प्रकाशितञ्च ।

प्रथमावृत्तिः] —०— सम्वत् १९८३

॥ श्रीः ॥

तत्वबोधः

गाजीपुर मण्डलान्तर्गत बालापुर निवासी-
पण्डित-विश्वनाथ कृत,
भाषा टीका सहितः ।

मुमुक्षुभिः स्वामी कृष्णानन्दयतिभिः संशोधितः
मुमुक्षुणांकृते महोपकारी ग्रन्थोऽयम् ।

स च

फर्म-बाबू बैजनाथ प्रसाद
बुकसेलर महोदयेन
काश्यां
विश्वेश्वर नाम्नि यन्त्रालये मुद्रितं प्रकाशितश्च ।

भूमिका ।

प्रिय पाठकगण ! इस असार संसार में माया के प्रपञ्च से व्याकुल होकर मोक्ष चाहनेवाले पुरुषों को तत्त्व ज्ञान परमोपयोगी है ! क्योंकि श्रीस्वामी शङ्कराचार्यजी ने स्वयं इस प्रकार बताया है कि—नष्टे द्रव्ये कः परिवारः ज्ञाते तत्वे कः संसारः भजगोविन्दं इत्यादि इस प्रकार तत्वबोध को मोक्ष का परम साधक बताकर स्वयं तत्वबोध नाम का ग्रन्थ निर्माण कर मुमुक्षुवों का हित किया है "मैंने" इसकी "भावार्थ बोधिनी" टीका अपने गुरूजी पूज्यतम प्रातः स्मरणीय मूर्ति श्री १०८ पं० रामचरित्रजी मिश्र के संन्यास हो जाने पर उन्हीं के सेवार्थ लिखी। यद्यपि बहुत सी टीकायें हैं परन्तु इसमें तत्वों के ऊपर भली प्रकार स्पष्ट विचार किया गया है जो एक बार पढ़ने ही पर सज्जनों को मालूम होगा। मैं इस ग्रन्थ को पुज्यतम गुरूजी को समर्पण कर प्रार्थना करता हूँ कि हमारी यह तुच्छ सेवा स्वीकार की जाय।

समर्पक—
विश्वनाथ पाण्डेय।

॥ श्रीः ॥

अथ तत्वबोधः प्रारम्भः ।

मणिप्रभा टीका सहितः ।

वासुदेवेन्द्र योगीन्द्रं नत्वा ज्ञानप्रदं गुरुम् ।
मुमुक्षूणां हितार्थाय तत्वबोधोऽभिधीयते ॥

भाषा–ज्ञान को देने वाले योगिन्द्र वासुदेवेन्द्र गुरुजी को प्रणाम करके संसार के बन्धन से छूटने की इच्छा करने वाले मुमुक्षु पुरुषों के लिये तत्व का बोध कराने वाला तत्व बोध नाम का ग्रन्थ कहता हूँ ॥ १ ॥

साधन चतुष्टय सम्पन्नाधिकारिणां मोक्ष–
साधन भूतं तत्व विवेक प्रकारं वक्ष्यामः ॥

भाषा–संसार में सब वस्तु भरी हैं। किन्तु जिसको जिसकी इच्छा है वही उस वस्तु का अधिकारी है। इस तत्व विवेक का चारो प्रकार का साधन जिनके पास है वही अधिकारी हैं। उन्हीं के लिये मोक्ष यानी संसार का आवागमन रूप बन्धन से छुड़ाने का साधन भूत तत्वों के विचार के प्रकार को तत्व विवेक प्रकार को कहता हूँ।

भावार्थ—मुमुक्षु पुरुषों ने तत्वों का विचार कर ही संसार का आवागमन रूप बन्धन को तोड़ कर मोक्ष प्राप्त किया है। इसलिये यह तत्व विवेक नामक ग्रन्थ मोक्ष का साधक है। तत्वों के विचार ही के द्वारा मोक्ष सध सकता है।

प्रश्न—साधन चतुष्टयं किम् ?

उत्तर—नित्यानित्य वस्तु विवेकः ॥ १ ॥

इहा मुत्रार्थफल भोग विरागः ॥ २ ॥

समाहि षट्क सम्पत्तिः ॥ ३ ॥

मुमुक्षुत्वं चेति ॥ ४ ॥

भाषा प्रश्न—पहिले कहा गया है कि चारो प्रकार का साधनवाला ही पुरुष इस ग्रन्थका अधिकारी है। तब चारो साधन कौन २ हैं ?

उत्तर—पहिला साधन—नित्य और अनित्य-चीजों का विचार होना।

दूसरा साधन—इस लोक के फलों के भोगों में विराग होना। परलोक के फलों के भोगों में विराग होना।

तीसरा साधन—शम, दम, इत्यादि छः प्रकार की सम्पत्तियों का होना।

चौथा साधन–मोक्ष यानी संसार के बन्धनों से छूट जाने की इच्छा होना।

नित्यानित्य वस्तु विवेकः कः ? नित्यवस्त्वेकं ब्रह्मतद्व्यतिरिक्तं सर्वमनित्यम्। अयमेव नित्यानित्य वस्तु विवेकः॥

भाषा–पहिला साधन कहा गया है कि नित्य और अनित्य वस्तुओं का विचार। तब कहते हैं कि नित्य अनित्य वस्तुओं का विचार क्या है।

उत्तर–नित्य वस्तु एक ब्रह्म है। उसको छोड़ कर और सब अनित्य है। इसी विचार को नित्यानित्य वस्तु विवेक कहते हैं।

भावार्थ–संसारी जीव संसार के वस्तुवों को प्राप्त करने की इच्छा से अपने अमूल्य आयु को बिता देता है, और उसी अनित्य यानी नश्वर वस्तु को प्राप्त कर सुख मानता है। जब उस नश्वर वस्तु का नाश हो जाता है, तब वह दुखी हो जाता है। इस प्रकार क्षणिक दुःख सुख का अनुभव करता हुआ घबड़ा कर अनित्य यानि जो सदा न रहे। नित्य जो सदा रहे। इस बात का जो विचार करता है वही नित्यानित्य विवेक है, वही पहला साधन है। वह साधन जिसके पास हो वह पहला अधि-

कारी है। अनित्य वस्तुवों से अभ्यास के द्वारा चित्त हटाकर नित्य जो एक ब्रह्म है उसमें अपने मन को लगाता है। जैसा कि—एकमेवा द्वितीयं ब्रह्मनेह नानास्ति किञ्चनेत्यादि श्रुतियों से कहा गया है।

विरागः कः ? इह स्वर्ग भोगेषु इच्छा-राहित्यम् ।

प्रश्न—विराग किसको कहते हैं ?

उत्तर—इस मृत्युलोक और स्वर्ग लोक के भोगों में इच्छा न होना इसी को विराग कहते हैं।

शमादि साधन सम्पत्तिः काः ?

शमो, दमः, उपरतिस्तितिक्षा श्रद्धा समाधानं चेति ।

भाषा—शमादि सम्पत्तियों का होना तीसरा साधन कहा गया है। प्रश्न है कि शमादि साधनों की सम्पत्तियाँ कौन कौन हैं।

उत्तर—शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान, यही छः सम्पत्तियाँ हैं। यह जिसके पास हों वह तीसरा साधक है।

शमः कः ? मनो निग्रहः ।

भाषा—सन्देह होता है कि शम क्या है।

उत्तर–विषय के पदार्थों से मन के रोकने को शम कहते हैं।

भावार्थ–मन की वृत्तियाँ जब तक विषय भोगने में लगी रहेंगी तब तक तत्वों का विचार नहीं हो सकता, तब तो विषय भोगों का विचार हो सकता है। इसलिये भोगों से मन को हटाना ही शम है।

दमः कः ? चक्षुरादि वाह्येन्द्रिय निग्रहः।

भाषा–दम क्या है–आँख, कान, इत्यादि इन्द्रियों को रूप रस, गन्ध आदिक विषयों से रोकने को दम कहते हैं।

भावार्थ–जब तक बाहरी इन्द्रियों से विषय को न हटाया जाय तब तक आभ्यन्तरिक मन की वृत्तियाँ दूर नहीं हो सकती हैं, विषयों से। इसी प्रकार बाहरी इन्द्रियों को कथमपि हटा कर भी जो मन से विषयों को सोचते हैं वे भी मिथ्या चरित्र हैं।

उपरतिः का ? स्वधर्मानुष्ठान मेव।

प्रश्न–उपरति किसको कहते हैं। अपने धर्म के अनुष्ठान में मन लगाने को।

तितिक्षा का ? शीतोष्ण सुख दुःखादि सहिष्णुत्वम्।

भाषा—तितिक्षा क्या है ? जाड़ा गर्मी तथा सुख दुःख इनका सहन करने को ही तितिक्षा है ।

भावार्थ—जब नित्य वस्तु ब्रह्म में मन लगा तब जाड़ा लगने लगा, बीमार होकर दुःखी हो गये, कुछ पाकर सुखी होगये, बस वह भूल गया, मन हट गया । तब इनको सहन करें और मन को ब्रह्मानन्द से हटने न दें, यह तितिक्षा है ।

श्रद्धा कीदृशी ? गुरूवेदान्त वाक्येषु विश्वासः श्रद्धा ।

भाषा—श्रद्धा क्या है ? गुरु वाक्य और वेदान्त वाक्य में विश्वास होना ।

समाधानं किं ? चित्तैकाग्रता ।

भाषा—समाधान क्या है । अन्य विषयों से मन हटा कर ब्रह्म में ही लगाने को एकाग्रता कहते हैं ।

मुमुक्षुत्वं किम् ? मोक्षो मे भूयादितीच्छा ।

भाषा—मुमुक्षुत्व क्या है ? संसार के आवागमन रूप बन्धनों से छूटने की इच्छा करने को मुमुक्षुत्व कहते हैं ।

एतत्साधन चतुष्टयं ततस्तत्व विवेकस्याधिकारिणो भवन्ति ।

भाषा—पहले कहे हुए चारो साधनों से युक्त पुरुष ही तत्व विवेक का अधिकारी है।

तत्वविवेकः कः ? आत्मा सत्यस्तदन्यत्सर्वं मिथ्येति।

भाषा—तत्व विवेक क्या है ? आत्मा सत्य है उसके अतिरिक्त जो कुछ है, वह सब मिथ्या है। इसी विचार को तत्व विवेक कहते हैं।

आत्माकः ? स्थूल सूक्ष्मकारण शरीराद्व्यतिरिक्तः पञ्चकोशातीतः सन् अवस्थात्रय साक्षी सच्चिदानन्द स्वरूपः सन् यस्तिष्ठति स आत्मा।

भाषा—आत्मा क्या है ? क्योंकि पहले कहा गया है कि आत्मा सत्य है।

उत्तर—स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर, इन शरीरों से भिन्न अन्नमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश आदिक पञ्च कोशों से भिन्न, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति इन अवस्थाओं का साक्षी सत्‌चित् आनन्द स्वरूप आत्मा है। आत्मा इसी आकार में सर्वदा रहता है।

स्थूल शरीरं किम् ? पञ्चीकृत पञ्चमहाभूतैः

कृतं सत्कर्मजन्यं सुख दुःखादि भोगायतनं शरीरम् । अस्तिजायते वर्धते विपरिणमते अय: क्षीयते विनश्यतीति षड्विकार वदेतत्स्थूलं शरीरम् ।

भाषा–स्थूल शरीर क्या है ?

उत्तर–पञ्चीकरण किये हुए पञ्च महाभूतों से बनाया हुआ, कर्मों से उत्पन्न हुआ, सुखादि भोगों का भवन यानी जीवात्मा के सुखादि भोगों के लिये ठहरने की जगह इसी को शरीर कहते हैं । उत्पन्न होता है, बढ़ता है, बदलता है, क्षीण होता है, नष्ट हो जाता है, इस स्थूल शरीर में छः विकार होते हैं ।

सूक्ष्म शरीरं किम् ? अपञ्ची कृत पञ्चमहाभूतैःकृत सत्कर्मजन्यं सुखदुःखादि भोगसाधनं पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि, पञ्चकर्मेन्द्रियाणि पञ्चप्रणादयः मनश्चैकं बुद्धिश्चैका एवं सप्तदश कलाभिः यस्तिष्ठति तत्सूक्ष्म शरीरम् ।

भाषा–सूक्ष्म शरीर क्या है । बिना पञ्चीकरण किये हुए पञ्च महाभूतों से बना हुआ, श्रेष्ठ कर्मों से उत्पन्न

हुआ, सुख दुःखादिकों को भोगने का साधन पाँच ज्ञाने-न्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय पाँच प्राणादि वायु एक मन एक बुद्धि इन सत्रह कलाओं से युक्त सूक्ष्म शरीर है।

श्रोत्रं त्वक्चक्षू रसना घ्राणमिति पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि। श्रोत्रस्य दिग्देवता, त्वचो वायुः, चक्षुषः सूर्य्यः, रसनायावरुणः घ्राणस्याश्विना-विति, ज्ञानेन्द्रिय देवताः। श्रोत्रस्य विषयः शब्दग्रहणम्, त्वचो विषयः स्पर्शग्रहणम्, चक्षुषो विषयः रूपग्रहणम्, रसनायाविषयो रसग्रहणम्, घ्राणस्य विषयो गन्धग्रहणमिति!

भाषा—१ कान, २ त्वचा, ३ आँख, ४ जीभ, ५ नासिका ये पाँच ज्ञानेन्द्रियां हैं। अब ज्ञानेन्द्रियों के देव-तावों को कहते हैं। यानी कान के देवता दिशाएँ हैं, त्वचा का वायु, आँखों का सूर्य्य, जिह्वा का वरुण और नासिका का अश्विनी कुमार हैं। अब जो इन्द्रियाँ जिन विषयों को ग्रहण करती है उन विषयों को कहते हैं। जैसे कान शब्दको ग्रहण करता है। कानका विषय शब्द ग्रहण करना है त्वचा का स्पर्श, नेत्र का रूप, जिह्वा का रस, नासिका का गन्ध ग्रहण करना है।

ज्ञानेन्द्रिय, देवता, विषयबोधक चक्रमिदम् ।

इन्द्रिय	देवता	विषय
श्रोत्रस्य	दिग्देवता	शब्द ग्रहणम्
त्वचो	वायुः	स्पर्श ग्रहणम्
चक्षुषः	सूर्यः	रूप ग्रहणम्
रसनायाः	वरुणः	रस ग्रहणम्
घ्राणस्य	अश्विनौ	गन्ध ग्रहणम्

वाक्, पाणि, पाद, पायू, पस्थानीति पञ्च कर्मेन्द्रियाणि । त्वचो देवता वह्निः । हस्तयोरिन्द्रः, पादयोर्विष्णुः, पायोर्मृत्युः उपस्थस्य प्रजापतिरिति कर्मेन्द्रियदेवताः । वाचो विषयो भाषणम् । पाण्योर्विषयो वस्तुग्रहणम् । पादयोर्विषयो गमनम् । पायोविषयो मलत्यागः उपस्थस्य विषय आनन्द इति ।

भाषा—१ वाणी, २ पाणी हाथ, ३ पाँव, ४ गुदा, ५ लिंग इन्हीं पाँचों को कर्मेन्द्रिय कहते हैं । इनके देवता इस प्रकार हैं । वाणी के देवता अग्नि, हाथों के इन्द्र, पावों के विष्णु, गुदा के मृत्यु, लिंग के प्रजापति हैं ।

अब इनका विषय कहते हैं। वाणी का विषय भाषण बोलना है, हाथों का चीजों को लेना, पावों का चलना, गुदा का मल त्याग है, लिंग का आनन्द है।

कर्मेन्द्रिय, देवता, विषयबोधक चक्रम्।

इन्द्रिय	देवता	विषय
वाणी	अग्नि	भाषण
हाथों का	इन्द्र	वस्तुवों का लेना
पावों का	विष्णु	गमन चलना
गुदा का	मृत्यु	मल त्याग
लिंग का	प्रजापति	आनन्द है

कारण शरीरं किम्? अनिर्वाच्यानाद्य विद्यारूपं शरीरद्वयस्य कारण मात्रं सत् स्वस्वरूपज्ञानं निर्विकल्पकरूपं यदस्ति तत्कारण शरीरम्।

भाषा–कारण शरीर क्या है? अनिर्वाच्य व्यष्टि यानी अविद्या में जो चेतन का प्रतिबिम्ब है उसी को जीव कहते हैं। व्यष्टि अविद्या में जो चेतन का प्रतिबिम्ब है इस समूह का नामही कारण शरीर है।

अवस्थात्रयं किम् ? जाग्रत्स्वप्न सुषु
प्त्यवस्थाः ।

भाषा—तीन अवस्थायें यानी १ जाग्रत, २ स्वप्न, ३ सुषुप्त्यवस्था ।

जाग्रदवस्था का ? श्रोत्रादि ज्ञानेन्द्रियैः शब्दादिविषयैश्च ज्ञायते इति यत्साजाग्रदवस्था । स्थूल शरीराभिमानी आत्मा विश्व इत्युच्यते ।

भाषा—जाग्रतअवस्था क्या है ? ज्ञानेन्द्रिय और उनके विषयों से जिसका ज्ञान होता है वही जाग्रतअवस्था है ।

भावार्थ—जैसे कानसे शब्द का ज्ञान जाग्रतअवस्था में होता है । आँख रूप को जाग्रतअवस्था में ही जानती है । इसी प्रकार नाक से गन्ध, जिह्वा से रस, त्वचा से स्पर्श का ज्ञान जाग्रत ही में होता है । स्थूल शरीर का अभिमानी जो आत्मा है उसको विश्व कहते हैं ।

स्वप्नावस्था केतिचेत् ? जाग्रदवस्थायां यद्दृष्टं यच्छ्रुत तज्जनितवासनया निद्रा समये यः प्रपञ्चः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था सूक्ष्मशरीराभिमानी आत्मा तैजस इत्युच्यते ।

भाषा—जाग्रतअवस्थामें जो देखा और जो सुना है उस

देखने सुनने से जो वासना उत्पन्न हुई निद्रावस्था में उसी वासना से जो प्रपञ्च प्रतीत होता है वही स्वप्नावस्था है। सूक्ष्म शरीराभिमानी आत्मा तैजस कहा जाता है।

अतः सुषुप्त्यवस्था कः ? अहं किमपि न जानामि सुखेन मया निद्राऽनुभूयते इति सुषुप्त्यवस्था । कारण शरीराभिमानी आत्मा-प्राज्ञ इत्युच्यते ।

भाषा–सुषुप्ति अवस्था क्या है ? मैं कुछ नहीं जानता, सुख से मैंने निद्रा का अनुभव किया, इस प्रकार का ज्ञान जब होता है उसी को सुषुप्ति अवस्था कहते हैं। कारण शरीराभिमानी आत्मा को प्राज्ञ कहते हैं।

पञ्चकोशाः के ? अन्नमयः प्राणमयो मनोमयो विज्ञानमय आनन्दमयश्चेति ।

भाषा–पञ्चकोश क्या है ? अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय ये पाँच कोश हैं।

अन्नमयः कः ? अन्नरसेनैव भूत्वा अन्नरसेनैव वृद्धिं प्राप्य अन्नरूप पृथिव्यां यद्विलीयते तदन्नमयः कोशः स्थूल शरीरम् ।

भाषा—अन्न रस से ही उत्पन्न होकर, अन्न रस से ही बढ़कर जो अन्न रूप पृथ्वी में लीन होता है उस स्थूल शरीर को अन्नमय कोश कहते हैं ।

प्राणमयः कः ? प्राणादि पञ्चवायवः वागादिन्द्रिय पञ्चकं प्राणमयः ।

भाषा—प्राणमय कोश क्या है ? प्राण आदि पाँचो वायु और वाणी आदि पाँचो कर्मेन्द्रियाँ इसको प्राणमय कोश कहते हैं ।

मनोमयः कोशः कः ? मनश्च ज्ञानेन्द्रिय पञ्चकं मिलित्वा भवति समनोमयः कोशः ।

भाषा—मनोमय कोश क्या है ? एक मन और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ मिलकर मनोमय कोश होता है ।

विज्ञानमयः कः ? बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रिय पञ्चकं मिलित्वा यो भवति स विज्ञानमयः कोशः ।

भाषा—बुद्धि और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ ये सब मिलकर विज्ञानमय कोश होता है ।

आनन्दमयः कः ? एवमेव कारण शरीर भूता विद्यास्थमलिन सत्वं प्रियादि वृत्तिसहितं सत् आनन्दमयः कोशः ।

भाषा—आनन्दमय कोश क्या है ? इसी तरह कारण शरीर भूत अविद्या में स्थित मलिन रजोगुण तमोगुण से दबा हुआ सत्वगुण प्रियादि वृत्तियों से युक्त होकर आनन्दमय कोश है।

एतत्कोश पञ्चकं मदीयं शरीरं मदीयाः प्राणाः मदीयं मनश्च मदीया बुद्धिर्मदीयं ज्ञानं-मिति स्वेनैवज्ञायते । तद्यथा मदीयत्वेन ज्ञातं कटक, कुण्डल, गृहादिकं स्वस्माद्भिन्नं तथा पञ्च-कोशादिकं मदीयत्वेन ज्ञातमात्मान भवति ।

भाषा—ये पाँचो कोश, तथा यह मेरा शरीर ये मेरे प्राण, मेरा मन, मेरी बुद्धि, मेरा ज्ञान ये सब अपने ही से जाने जाते हैं। परन्तु अपने से भिन्न हैं। जैसे अपना कटक है, अपना कुण्डल है, अपना घर है, ये सब अपने से भिन्न हैं इसी प्रकार अपने से जाने हुए पञ्चकोश आदि अपने से भिन्न हैं, आत्मा नहीं है। भावार्थ यह है कि पञ्चकोश तो माया रचित है। और आत्मा माया से भिन्न केवल द्रष्टा है।

आत्मा तर्हि कः ? सच्चिदानन्द स्वरूपः ।

भाषा—तब आत्मा क्या है ? सत् चित् आनन्द स्वरूप है।

सत्किम् ? कालत्रयेऽपि तिष्ठतीतिसत् ।

भाषा—सत् किसको कहते हैं ? तीनों कालों में समान भाव से जो रहे यानी न्यूनाधिक न हो उसको सत् कहते हैं ।

चित् किम् ? आनन्द स्वरूपः ।

भाषा—चित् किसको कहते हैं ? आनन्द स्वरूप सम्पूर्ण पदार्थों का ज्ञाता उसे चित् कहते हैं ।

आनन्दः कः ? सुख स्वरूपः ।

भाषा—आनन्द क्या है ? सुख स्वरूप दुःख का जिसमें लेश न हो ।

एवं सच्चिदानन्द स्वरूपं स्वात्मानं वि-जानीयात् ।

भाषा—ऐसा सच्चिदानन्द स्वरूप अपने आत्माको जाने ।

अथ चतुर्विंशति तत्वोत्पत्तिं प्रकार वक्ष्यामः ।

भाषा—इसके बाद २४ तत्वों की उत्पत्ति का प्रकार कहता हूँ ।

ब्रह्माश्रया सत्व रजस्तमो गुणात्मिका माया अस्ति तत आकाशः सम्भूतः, आका-शाद्वायुः, वायोस्तेजः, तेजसआपः, अद्भ्यपृथ्वी ।

भापा—ब्रह्म के आश्रित जो सत्वगुण रजोगुण तमोगुणात्मिका माया है, उससे प्रथम आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से तेज, तेज से जल, जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई है ।

एतेषां पञ्चतत्वानां मध्ये आकाशस्य सात्विकांशाच्छ्रोत्रेन्द्रियं सम्भूतम् । अग्नेः सात्विकाशांच्चक्षुरिन्द्रियं संभूतम् । वायोसात्विकाशात्वगिन्द्रियं संभूतम् । जलस्य सात्विकांशाद्रसनेन्द्रियं संभूतम् । पृथिव्याः सात्विकांशात् घ्राणेन्द्रियं संभूतम् । एतेषां पञ्चतत्वानां समष्टि सात्विकांशान्मनो बुद्धयहंकार चिन्तान्तः करणानि संभूतानि ।

भापा—इन पाँच तत्वों में से आकाश तत्व के सात्विक अंश से श्रवणेन्द्रिय (कान) हुआ अग्नि तत्व के सात्विक अंश से नेत्र हुआ । वायु तत्व के सात्विक अंश से स्पर्शेन्द्रिय हुआ । जल के सात्विकांश से जिह्वा इन्द्रिय हुआ । पृथ्वी के सात्विकांश से नाक हुई । इन पांचो तत्वों के सम्मिलित सात्विकांश से मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त ये चार प्रकार के अन्तःकरण बने हैं ।

संकल्प विकल्पात्मकं मनः, निश्चयात्मिका बुद्धिः, अहंकर्ता अहंकारः, चिन्तनकर्तृ चित्तम्। मनसो देवता चन्द्रमाः बुद्धेर्ब्रह्मा, अहंकारस्य रुद्रः, चित्तस्य वासुदेव ।

भाषा—संकल्प विकल्पात्मक स्वरूप मन है । यानी जहाँ संकल्प विकल्प को ही मन का बताया है ।

भावार्थ—यह मन पञ्चत्व के समष्टि सात्विकांश से उत्पन्न होने वाले अन्तःकरणों में पहिला है । इसका रूप नहीं होता केवल लक्षण से जाना जाता है । यानी हम गंगा स्नान करें कि नहीं यही सोचने वाला मन है, और निश्चयात्मिका बुद्धि दूसरी है यह दिन ही है, रात नहीं यह निश्चय करने वाली बुद्धि है । मैं चलता हूँ, खाता हूँ, पीता हूँ, यह सोचना ही अहंकार है । किसी वस्तु का चिन्तन करने वाला चित्त है, मन का देवता चन्द्रमा, बुद्धि का ब्रह्मा, अहंकार का रुद्र और चित्त का वासुदेव हैं । इसी तरह से ५ ज्ञानेन्द्रियाँ तथा मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त आकाशादि पाँच तत्वों के सात्विक अंश से भये हैं ।

एतेषां पञ्चतत्वानां मध्ये आकाशस्य राज-

सांशात् वागिन्द्रियं सम्भूतम् । वायो राजसांशात् पाणीन्द्रियं संभूतम् । वह्नेराजसांशात् पादेन्द्रिय संभूतम् जलस्य राजसांशात् उपस्थेन्द्रियम् पृथिव्या राजसांशात् गुदेन्द्रियं संभूतम् । एतेषां समष्ठि राजसांशात पञ्च प्राणाः संभूताः ।

भाषा—इन पाँचो तत्वों में आकाश तत्व का राजस अंश से वागिन्द्रिय हुई है, वायु तत्व के राजस अंश से हस्तेन्द्रिय हुआ है, तेज के राजस अंश से चरणेन्द्रिय, और जल के राजस अंश से उपस्थ (लिंग) पृथ्वी के राजस अंश से गुदा तथा पाँचो तत्वों के राजस अंश से पाँच कर्मेन्द्रिय और पाँच प्राण यह दश पदार्थ हुए हैं ।

एतेषां पञ्चतत्वानां तामसांशात् पञ्चिकृत पञ्चतत्वानि भवन्ति । पञ्ची करणं कथमिति चेत् एतेषां पञ्च महाभूतानां तामसांश स्वरूप मेकैकं भूतं द्विधा विभज्य एकमेकमर्धं पृथक् तुष्णीं व्यवस्थाप्या परमर्धं चतुर्धाविभज्य स्वार्धं मन्येष्वर्धेषु स्वभाग चतुष्टयं संयोजनं कार्यं तदा

पञ्चीकरणं भवति । एतेभ्यः पञ्चीकृत पञ्चमहाभूतेभ्यः स्थूल शरीरं भवति । एवं पिण्ड ब्रह्माण्डयो रैक्यं सम्भूतम् ।

भाषा—इन पाँच तत्वों के तामस अंश से पञ्चीकरण किये हुए पाँच तत्व उत्पन्न होते हैं। पञ्चीकरण कैसे ? पृथ्वी के, जल के, तेज के, वायु के, आकाश के इन पाँचों तत्वों के तमोगुण अंश को दो स्थानों में विभाग करके आधे आधे भाग को चार चार भाग करके एक एक भाग को बाकी तत्वों के आधे भाग में चुप होकर मिला दे तब पञ्चीकरण होता है। पञ्चीकृत पञ्चमहाभूतों से स्थूल शरीर होता है। इस प्रकार पिण्ड और ब्रह्माण्ड की एकता हुई। जिस प्रकार पञ्चमहाभूतों से पिण्ड होता है वैसेही ब्रह्माण्ड भी पिण्ड ब्रह्माण्ड में भेद नही है।

स्थूल शरीराभिमानी जीवनामकं ब्रह्म प्रतिबिम्बं भवति स एव जीवः प्रकृत्या स्वस्मादीश्वरं भिन्नत्वेन जानाति अविद्योपाधिः सन् आत्मा जीव इत्युच्यते ।

भाषा—ब्रह्म का प्रतिबिम्ब ही स्थूल शरीर का अभिमान कर जीव कहाता है। वही जीव प्रकृति यानी माया

से ईश्वर को अपने से पृथक् जानता है । अविद्या की उपाधि वाला आत्मा जीव कहाता है ।

मायोपाधिःसन् ईश्वर इत्युच्यते । एवमुपाधि भेदाज्जीवेश्वर भेद दृष्टिर्यावत्पर्यन्तं तिष्ठति तावत्पर्यन्तं जन्म मरणादिरूप संसारो न निवर्तते । तस्मात् कारणात् न जीवेश्वरयोर्भेद बुद्धिः कार्या ।

भाषा—समष्टि अविद्या में (माया में) चेतन का जो प्रतिबिम्ब है उसी को ईश्वर कहते हैं । इस प्रकार उपाधि भेद से जीव भिन्न है, और ईश्वर भिन्न है ऐसी भेदबुद्धि जब तक रहती है तब तक जन्म मरणादि रूप संसार नहीं छूटता है । इसी से जीव और ईश्वर एक ही है, इस प्रकार अपनी बुद्धि रखनी चाहिये, भेद बुद्धि को दूर करना चाहिए ।

ननु साहंकारस्य किंचिज्ज्ञस्य जीवस्या निरहंकारस्य सर्वज्ञस्येश्वरस्य तत्वमसीति महावाक्यात्कथमभेदबुद्धिः स्यादुभयोर्विरुद्ध धर्माक्रान्तत्वात् ।

अब पहले जो कहे हैं कि जीव और ईश्वर में अभेद बुद्धि होनी चाहिए वहाँ सन्देह करते हैं कि–जीव अल्पज्ञ और अहंकार युक्त है। ईश्वर सर्वज्ञ और अहंकार रहित है। फिर यद्यपि "तत्वमसि" यह वाक्य भी अभेद बुद्धि ही के लिये कहती है परंच अभेद बुद्धि कैसे क्योंकि दोनों बुद्धि धर्म वाले हैं। यानी जीव अल्पज्ञ अहंकारी ईश्वर सर्वज्ञ अहंकार रहित, फिर इनका अभेद कैसा।

इति चेन्न स्थूल, सूक्ष्म, शरीराभिमानी त्वम्पद वाच्योर्थ मुपाधि विनिर्मुक्तं समाधि दशासम्पन्नं शुद्धं चैतन्यं त्वम्पलक्ष्यार्थः ।

इस प्रकार का शंका नहीं, क्योंकि "तत्वमसि" इस श्रुति ने जीव और ईश्वर में भी एकता मानी है। जैसे तत्व मसि इस महा वाक्य में तत्–त्वम्–असि यह तीन पद हैं, अर्थात् तत् यानी वह त्वम् तूँ असि है वह ईश्वर तूँ है। विशेषार्थ यह है कि तत्पद के दो अर्थ हैं वाच्य और लक्ष्य वाच्य और लक्ष्य त्वं पद के भी अर्थ हैं। इस प्रकार तत्व मसि इस महा वाक्य में तत् और त्वं पद का वाच्य अर्थ माया अविद्या का सम्बन्धी है, लक्ष्य अर्थ माया अविद्या के सम्बन्ध से रहित शुद्ध चैतन्य ब्रह्म है इसी कारण स्थूल सूक्ष्म शरीराभिमानी त्वंपद का वाच्य

अर्थ है। उपाधि रहित समाधि दशा को पहुँचा शुद्ध चैतन्य ऐसा त्वंपद का लक्ष्य अर्थ है।

एवं सर्वज्ञत्वादि विशिष्ट ईश्वरस्तत्पद वाच्यार्थः। उपाधि शून्यं शुद्ध चैतन्यं तत्पद लक्ष्यार्थः। एवं च जीवेश्वर योश्चैतन्य रूपेणाऽभेदे बाधका भावः।

भाषा—इस प्रकार सर्वज्ञत्व आदि विशेषण युक्त जो ईश्वर है वह तत्पद का वाच्य अर्थ है। उपाधि शून्य शुद्ध चैतन्य तत्पद का लक्ष्य अर्थ है। इस प्रकार जीव ईश्वर का चैतन्य रूप से अभेद होने में कोई बाधा नहीं।

एवं च वेदान्तवाक्यैः सद्गुरूपदेशेन सर्वेष्वपि भूतेषु येषां ब्रह्मबुद्धि रुत्पन्ना ते जीवन्मुक्ता इत्यर्थः।

भाषा—इस प्रकार वेदान्त वाक्यों से श्रेष्ठ गुरु के उपदेश से सम्पूर्ण प्राणियों में जिनकी ब्रह्म बुद्धि है वे ही जीवन्मुक्त हैं।

ननु जीवन्मुक्तः ? यथा देहोऽहं पुरुषोऽहं ब्राह्मणोऽहं शूद्रोऽहमस्मि इति दृढनिश्चयस्तथा

नाहं ब्राह्मणो न शूद्रो न पुरुषः किन्त्वसङ्गः सच्चिदानन्द स्वरूपः स्वप्रकाशः सर्वान्तर्यामी चिदाकाश रूपोऽस्मि इति दृढनिश्चय रूपापरोक्ष ज्ञानवान् जीवन्मुक्तः ।

भाषा—जीवन्मुक्त कौन है ? मैं देह स्वरूप हूँ, मैं पुरुष हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ, मैं शूद्र हूँ, इस प्रकार दृढ़ निश्चय है। तथा न मैं ब्राह्मण हूँ, न शूद्र हूँ, न पुरुष हूँ। बल्कि असंग देहादि प्रपञ्च समूह से भिन्न हूँ, सच्चिदानन्द स्वरूप हूँ, स्वप्रकाश हूँ सर्वान्तरयामी हूँ, चिदाकाश रूप हूँ। ऐसा दृढ़ निश्चय रूप अपरोक्ष ज्ञान वाला पुरुष जीवन्मुक्त है।

ब्रह्मै वाहमस्मि इत्यपरोक्ष ज्ञानेन निखिल कर्मबन्ध विनिर्मुक्तः स्यात् ।

भाषा—मैं ब्रह्म ही हूँ इस अपरोक्ष ज्ञान के द्वारा सम्पूर्ण कर्मबन्धनों से मनुष्य छूट जाता हैं।

कर्माणि कति विधानि सन्ति इति चेत आगामि सञ्चित प्रारब्धभेदेन त्रिविधानि सन्ति ।

भाषा—कर्म कै प्रकार के हैं। आगामी सञ्चित, प्रारब्ध। इन भेदों से तीन प्रकार हैं।

आगामि कर्म किम् ? ज्ञानोत्पत्यनन्तरं ज्ञानि देहकृतं पुण्य पाप रूपं कर्मयदस्ति तदा गामीत्यभिधीयते ।

भाषा—आगामी कर्म क्या है ? ज्ञान की उत्पत्ति होने के पहले ज्ञानी के शरीर से किया हुआ जो पुण्य पाप रूप कर्म है, वह आगामी कर्म कहाता है ।

सञ्चितं कर्म किम् ? अनन्त कोटि जन्मानां बीजभूतं सत् यत्कर्म जातं पूर्वार्जितं तिष्ठ तिष्ठति तत्संचितं ज्ञेयम् ।

भाषा—सञ्चित कर्म किसको कहते हैं । पहले अनन्त कड़ोर जन्मों का बीज रूप जो कर्मों का समूह पहले का किया हुआ वही सञ्चित कर्म है ।

प्रारब्ध कर्मकिमिति चेत । इदं शरीर मुत्पाद्य लोके एवं सुख दुःखादि प्रदं यत्कर्म तत्प्रारब्धं भोगे नष्टं भवति, प्रारब्ध कर्मणां भोगा देवक्षय इति ।

भाषा—प्रारब्ध कर्म क्या है ? इस शरीर को उत्पन्न करके संसार में सुख दुःखादि का देने वाला जो कर्म है

उसे प्रारब्ध कर्म कहते हैं । वह प्रारब्ध कर्म भोगने ही से नष्ट होता है । क्योंकि प्रारब्ध कर्म का भोग से ही अन्त होता है ।

सञ्चितं कर्म ब्रह्मैवाहमिति निश्चयात्मक ज्ञानेन नश्यति । आगामि कर्माऽपि ज्ञानेन नश्यति । किञ्च आगामि कर्मणां नलिनीदल गतजल वज्ज्ञानिनां सम्बन्धो नास्ति ।

भाषा—सञ्चित कर्म "मैं ब्रह्म ही हूँ" इस निश्चयात्मक ज्ञान से नष्ट हो जाता है । आगामी कर्म भी ज्ञान से नष्ट हो जाता है । क्योंकि आगामी कर्मों का कमल के पत्र का जल के साथ जैसे सम्बन्ध नहीं होता उसी प्रकार ज्ञानियों से सम्बन्ध नहीं होते हैं ।

किञ्चये ज्ञानिनं स्तुवन्ति, भजन्ति, अर्चयन्ति, तान्प्रतिज्ञानि कृतमागामि पुण्यं गच्छति ये ज्ञानिनं निन्दन्ति, द्विषन्ति, दुःख प्रदानं कुर्वन्तितान् प्रतिज्ञानि कृतं सर्वमागामि क्रियमाणं यदवाच्यं कर्म पापात्मकं तद्गच्छति ।

भाषा—और क्योंकि जो ज्ञानियोंकी प्रशंसा करते हैं, सेवा करते हैं, पूजा करते हैं, उनको ज्ञानियों का आगामी

पुण्य प्राप्त होता है, और जो मनुष्य ज्ञानियों की निन्दा करता है, उनसे द्वेष करता है, या दुःख देते हैं उनको ज्ञानियों का आगामी किया हुआ सम्पूर्ण पापात्मक कर्म पहुँचता है ।

तथा चात्मवित्संसारं तीर्त्वा ब्रह्मानन्दमिहैव प्राप्नोति "तरति शोकमात्म वित्" इति श्रुतः ।

भाषा—आत्मज्ञानी पुरुष संसार से पार होकर इसी जन्म में ब्रह्मानन्द प्राप्त करता है । इसी बात को श्रुति भी कहती है कि "आत्मज्ञानी शोक का पार कर जाता है ।

तनुं त्यजतु वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा ज्ञान सम्प्राति समये मुक्तोऽसौ विगताशयः इति स्मृतेश्च ।

भाषा—ज्ञानी पुरुष काशी में शरीर त्याग करे वा चाण्डाल के घर में वह तो ज्ञान प्राप्ति के ही समय में मुक्त हो जाता है ।

इति श्रीविश्वनाथ कृत भावार्थ बोधिनी टीका समाप्ता ।

—****—

पं० श्रीलाल उपाध्याय द्वारा—श्रीविश्वेश्वर प्रेस काशीमें मुद्रित

कर्मकांड, व्रत कथा, स्तोत्र

और अन्यान्य विविध विषय की पुस्तकें ।

स्तोत्र रत्नाकर बड़ा पंटिक	१)	रविषष्ठी व्रत कथा भा.टी.	-)॥
" " " ग्लेज	१।)	लक्ष्मी कथा भा० टी०	=)
रामस्तुति	)॥	ऋषि पंचमी व्रत कथा— भाषा टीका	=)
रामस्तवराज	-)	राम पटल	≡)
रामरक्षा स्तोत्र	)॥	संध्या यजुर्वेदीय	-)
सत्यनारायण व्रत कथा— ५ अध्याई मूल	=)	संध्या सामवेदीय	-)
सत्यनारायण व्रत कथा— ५ अध्याई भा. टी.	=)॥	स्वस्त्ययन कलश पूजा	)॥
सत्यनारायण व्रत कथा— ७ अध्याई मूल	=)	आदित्य हृदय बड़ा	=)॥
सत्यनारायण व्रत कथा— ७ अध्याई भा० टी०	=)॥	अनन्त व्रत कथा भा. टी.	=)
		अक्षयनौमी व्रत कथा भाषा टीका सहित	-)॥
		कमलनेत्र स्तोत्र	)॥

—*****—

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी ।